दैनिक जागरण
भोपाल 26 मार्च 2020 चैत्र शुक्ल 2, संवत 2077
संस्थापक ▸ गुरुदेव गुप्त

और कमर कसना जरूरी

प्रधानमंत्री ने पांच दिन के अंदर दूसरी बार राष्ट्र को संबोधित करते हुए पूरे देश को तीन सप्ताह के लिए लॉकडाउन करने की जो घोषणा की वह यही बताती है कि कोरोना वायरस से उपजा संकट बहुत गंभीर रूप ले चुका है। इस गंभीरता को प्रधानमंत्री ने हरसंभव तरीके से न केवल रेखांकित किया, बल्कि देश की जनता को समझाने के साथ चेताया भी। ऐसा करना आवश्यक हो गया था, क्योंकि फिलहाल हालात काबू में आते नहीं दिखते। चूंकि यह एक ऐसा संकट है जो पूरी दुनिया में विकराल रूप धारण कर गया है इसलिए भारत सरीखे विशाल आबादी वाले देश के लिए एक कदम आगे बढ़कर सक्रियता दिखाना अनिवार्य हो गया था।

तीन सप्ताह का कर्फ्यू जैसा लॉकडाउन इसी अनिवार्यता की पूर्ति के लिए है। इस लॉकडाउन को सफल बनाने की जितनी जिम्मेदारी केंद्र और राज्य सरकारों के साथ उनकी एजेंसियों पर है उतनी ही जनता पर भी। यह बात देश के हर नागरिक को आत्मसात करनी होगी कि अपने और देश को बचाने का कारगर उपाय यही है कि हर कोई अपने घर पर ही रहे। लोगों को बिना समय गंवाए इसके लिए खुद मानसिक रूप से तैयार कर लेना चाहिए कि उन्हें अगले तीन सप्ताह घर पर रहकर एक तरह का तप करना है। कितनी भी कठिनाई आए, इस तप को संयम और अनुशासन के साथ इसलिए पूरा करना होगा, क्योंकि राष्ट्र के जीवन-मरण का प्रश्न खड़ा हो गया है।

तीन सप्ताह के लॉकडाउन की घोषणा के बाद तमाम लोग आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति को लेकर आशंका से घिर गए हैं इसलिए शासन-प्रशासन को इन वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति भी सुनिश्चित करनी होगी।

निःसंदेह तीन सप्ताह तक खुद को अलग-थलग करना और कई तरह की लक्ष्मण रेखाओं से बांधे रखना एक कठिन काम है, लेकिन जब संकल्प प्रबल हो तो उसे पूरा करना आसान हो जाता है। अपनी इस संकल्प शक्ति का परिचय देते हुए हम सभी को इस पर भी ध्यान देना होगा कि जब हमारे सामने धैर्य धारण करने की चुनौती आ खड़ी हुई है तब हमारे जैसे कुछ लोग कर्तव्य के कठिन पथ पर इसलिए डटे हैं ताकि सब सुरक्षित रहें। इनमें चिकित्सकों, स्वास्थ्य कर्मियों, सफाई कर्मियों के साथ पुलिस कर्मी एवं मीडिया कर्मी तो हैं ही, आवश्यक सेवाओं की पूर्ति में लगे लोग भी हैं।

चूंकि तीन सप्ताह के लॉकडाउन की घोषणा के बाद तमाम लोग आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति को लेकर आशंका से घिर गए हैं इसलिए शासन-प्रशासन को उसे भी प्राथमिकता के साथ दूर करना होगा और साथ ही इन वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति भी सुनिश्चित करनी होगी। यही काम समाचार पत्रों के प्रसार को लेकर भी करना होगा ताकि अफवाहों को रोका जा सके। लॉकडाउन के दौरान अपेक्षित पाबंदियों का सही तरह पालन हो, इसके लिए जनता की न्यूनतम जरूरतों की पूर्ति होते रहना जरूरी है।

राकेश परमार

वह सबके सामने मलेरिया की दवा को कोरोना का तोड़ बताने के राष्ट्रपति ट्रंप के बेतुके दावे को खारिज कर चुके हैं। फाउची बताते हैं कि फिलहाल कोरोना का एक ही तोड़ है। एकांतवास।

वायरस के इस सबसे बड़े डॉक्टर की बात सुनें

79 साल के एक बूढ़े पर अमेरिका की उम्मीदें जिंदा हैं। उन्हें उम्मीद है वह उन्हें इस बार भी बचा लेगा। आखिर वह पिछले 36 सालों से हर बार वायरसों के हमले में अमेरिकियों के लिए सुरक्षा कवच ढूंढता रहा है। यह शख्स इन दिनों कुछ समय टीवी पर नहीं दिखता, तो ट्विटर-फेसबुक पर सवाल तैरने लगता है।

डॉक्टर एंथनी फाउची। कोरोना के साथ यह नाम हर अमेरिकी की जुबान पर है। डॉक्टर फाउची अमेरिका की नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ एलर्जी ऐंड इन्फेक्शस डिजीज के 3 दशकों से मुखिया हैं। वह अमेरिका के छह राष्ट्रपतियों के साथ काम कर चुके हैं। उन्हें दुनिया में वायरस का सबसे बड़ा डॉक्टर माना जाता है। हर बार डॉक्टर फाउची अमेरिका में स्थितियों को संभालने में कामयाब रहे हैं।

लेकिन इस बार फाउची भी समझते हैं कि चुनौती सबसे अलग और बड़ी है। कभी मैराथन धावक रहे फाउची 6 मील दौड़ने का अपना रूटीन तोड़ चुके हैं। रोज करीब 20 से घंटे काम कर रहे डॉक्टर फाउची इन दिनों अमेरिका के सबसे व्यस्त शख्स हैं।

दरअसल अमेरिका इस समय कोरोना के कहर के जिस स्टेज पर जहां पहुंचा है, उससे आगे की तस्वीर बेहद खौफनाक है। इटली जैसी। जो एक दिन में 800 मौतें देख रहा है। जहां मौत का आंकड़ा पांच हजार पहुंचा रहा है। अमेरिका में साढ़े तीन सौ से ज्यादा जानें जा चुकी हैं। करीब 30 हजार लोग इस जानलेवा वायरस की चपेट में हैं। भारत इस समय अमेरिका के ठीक पिछले वाले पायदान पर खड़ा है।

ऐसे मुश्किल समय में डॉक्टर फाउची कोरोना का तोड़ खोजे जाने तक अमेरिकियों को लड़ने का एक मंत्र दे रहे हैं। भारत में गोमूत्र, वजू और जवानी की बेफिक्री में जीने वालों को वायरस के इस सबसे एक्सपर्ट की बात सुननी चाहिए। माननी चाहिए। कोरोना की वैक्सीन खोज लिए जाने, उसके करीब

पहुंचने या विकल्प मिलने के तमाम दावों के शोर के बीच डॉक्टर फाउची को अगले एक से डेढ़ साल में ही कुछ ठोस मिलने की उम्मीद है। वह सबके सामने मलेरिया की दवा को कोरोना का तोड़ बताने के राष्ट्रपति ट्रंप के बेतुके दावे को खारिज कर चुके हैं। फाउची बताते हैं कि फिलहाल कोरोना का एक ही तोड़ है। एकांतवास।

उनके मुताबिक जो समुदाय इस फॉर्म्युले को जितनी गंभीरता से अपनाएगा, वह कोरोना से बचा रहेगा और इसके असर से उतनी ही जल्दी बाहर निकलेगा। उनकी सबसे बड़ी टेंशन वे बेफिक्र युवा हैं, जो समझते हैं कि कोरोना उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। वह मानते हैं कि युवाओं को खतरा बेशक कम है। लेकिन एक कोरोना के एक कैरियर तौर पर वे इन युवाओं को बीमार और बुजुर्गों के लिए सबसे बड़ा खतरा मानते हैं। अमेरिका की अधिकांश आबादी इन दिनों घरों में कैद है। वहां बेचैनी बढ़ रही है। आखिर कब तक? इन सवालों के साथ ढेरों मेल फाउची के पास पहुंच रहे हैं। बस तीन से चार घंटे की नींद ले पा रहे फाउची को ये मेल्स न पढ़ पाने का अफसोस है। हालांकि उनके पास इस बार इन सवालों का कोई ठोस जवाब भी नहीं है। चीन और यूरोप का उदाहरण देते हुए वह कहते हैं, 'अभी तक देखा गया है कि कोरोना वायरस का ग्राफ ऊपर चढ़ता है। पीक पर पहुंचता है। फिर नीचे आता है। चीन को इससे निकलने में ढाई महीने का वक्त लगा। अब यूरोप इसका केंद्र है। इटली में यह अपने उफान पर है। वहां अभी कुछ हफ्ते इसके जारी रहने की आशंका है। इसके लौटने की समयसीमा का आकलन करना मुश्किल है।' कोरोना को लेकर कई अन्य सवाल भी हवा में तैर रहे हैं। पढ़िए उन तीन सबसे वायरल सवालों पर वायरस का यह एक्सपर्ट क्या सोचता है-

क्या अगले साल फिर लौटकर आएगा कोरोना?: इस सवाल पर डॉ. फाउची 2002 को याद करते हैं। वह कहते हैं, 'सार्स' जो कि चीन से उठा था, इसके 8 हजार मामले आए और 800 मौतें हुईं। मृत्युदर 10 फीसदी रही। इसके बाद यह वायरस वापस नहीं लौटा। लेकिन इस बार यह वायरस बिल्कुल अलग है। हालांकि यह कोरोना फैमिली का ही वायरस है, लेकिन यह बहुत प्रभावशाली तरीके से फैल रहा है। बहुत संभव है कि इस वायरस पर काबू पा लेने का बाद यह अगले सीजन में फिर लौटकर आए। लेकिन तब तक तस्वीर दूसरी होगी। क्योंकि तब तक इसकी दवाइयां हमारे पास होंगी। हम ज्यादा तैयार होंगे। दवाओं पर ट्रायल चल रहे हैं। उम्मीद है कि साल-डेढ़ साल में वैक्सीन हमारे पास होगी।' वायरस का का यह एक्सपर्ट डॉक्टर बताता है, 'चीन में यह वायरस अपने उफान पर था। चीन ने उसने शहरों को लॉकडाउन किया। करोड़ों लोग घर में बंद रहे। अब यह वायरस वहां काबू में है। अब मुट्ठी भर मामले सामने आ रहे हैं। लेकिन जो देखने वाली बात है कि अब चीनी नागरिक घरों से निकल रहे हैं। मिल-जुल रहे हैं। वह ऑइसोलेशन से बाहर आ रहे हैं। अगर हम फिर चीन में एक उफान देखते हैं, तो यह खतरे की घंटी होगी। इसका मतलब यह होगा कि यह वायरस बाउंस बैक भी करता है।

क्या गर्मी से मर जाएगा कोरोना?: गर्मी में वायरस के मरने के सवालों पर वह कहते हैं, 'कोरोना वायरस की बात छोड़ दें, तो देखा गया है कि अन्य वायरस गर्म और आर्द्र मौसम की तुलना में ठंडे और सूखे मौसम को पसंद करते हैं। यह तथ्य है। लेकिन इस बिल्कुल नए वायरस के कैरक्टर की हमारे पास कोई निश्चित जानकारी नहीं है। क्या यह वायरस इस पैटर्न को फॉलो करेगा, इस बारे में पूरे विश्वास के साथ अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। आपको सावधानी बरतने की पूरी जरूरत है, क्योंकि यह अलग तरह का वायरस है।'

युवाओं की क्यों है सबसे बड़ी जिम्मेदारी?: डॉक्टर फाउची कहते हैं, 'तथ्य यह है कि कुछ अपवादों को छोड़कर युवाओं को यह वायरस गंभीर रूप से बीमार नहीं करेगा। वे इससे संक्रमित जरूर हो सकते हैं। हो सकता है कि संक्रमण के बावजूद उनमें इसके लक्षण न दिखें या बहुत मामूली दिखें। ऐसे में ये युवा जाने-अनजाने बीमार या कम इम्यून सिस्टम वाले लोगों तक इस वायरस के संवाहक का काम कर सकते हैं। ऐसे में युवाओं पर न सिर्फ अपनों की, बल्कि पूरे समाज के लिए जिम्मेदारी है।'

आज का चिंतन

आचार विचार

कदाचित मनुष्य ही इसे समझ नहीं पा रहा है कि विचार और आचार की शुद्धता ही जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य और उपलब्धि है। दया, परोपकार, क्षमा, दान और साहचर्य जैसे तत्व मनुष्य की रचना में ही समाहित हैं और उन पांच तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनसे यह तन बना है। इनसे विरत होना अपने संरचनात्मक स्वभाव से दूर जाना है। भूमि, जल, वायु, अग्नि और क्षितिज एक साथ बने रहते हैं तो सृष्टि का अस्तित्व है और मनुष्य का भी। इनका असंतुलन यदि सृष्टि को विनाश की ओर ले जाने वाला है तो मनुष्य को भी। जीवन में तमाम विषधारी समस्याओं से सामना होता रहता है। मनुष्य का धर्म है कि सहज रहकर अपने गुणों से उनसे पार पाने की चेष्टा करे। किसी का भी जीवन कभी भी निष्कंटक नहीं रहा है। संसार में जो महापुरुष हुए हैं, उन्होंने भी असीम दुख सहे। उनके मार्ग में रोंगटे खड़े कर देने वाली बाधाएं आईं, किंतु वे अविजित रहे तो अपने सद्गुणों के कारण। इसीलिए आज उनकी पूजा होती है। उनकी उपलब्धियों को संसार ने याद रखा है। जीवन में सुख नहीं रहते तो दुख भी टल जाते हैं। वास्तव में सुख और दुख की अवधारणा ही दोषपूर्ण है। मनुष्य कर्मों की पूंजी एकत्र करता चले तो वह सुख और दुख से ऊपर उठ जाता है और निर्लिप्त अवस्था प्राप्त कर लेता है। मनुष्य को उसके कर्मो के अनुसार ही फल मिलना है। यदि बबूल बोया है तो अंगूर कहां से मिलेंगे। अंगूर पाने के लिए अंगूर की ही खेती करनी पड़ेगी। मात्र अपने कर्म करते जाने में ही उसे असीम आनंद मिलता है। जिन कार्यों से आत्म संतुष्टि मिले, वे ही सद्कर्म हैं और सद्गुणों के प्रतीक हैं। इनसे ही जीवन का प्रवाह बना रहता है और इसी से ही उसकी अविरल धारा बनाई रखी जा सकती है।

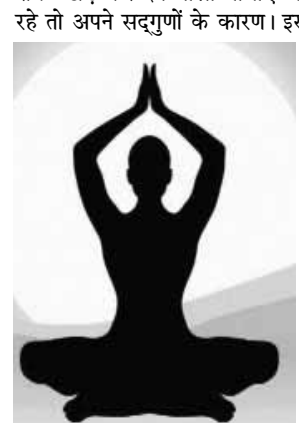

जीवन में सुख नहीं रहते तो दुख भी टल जाते हैं। वास्तव में सुख और दुख की अवधारणा ही दोषपूर्ण है। मनुष्य कर्मों की पूंजी एकत्र करता चले तो वह सुख और दुख से ऊपर उठ जाता है और निर्लिप्त अवस्था प्राप्त कर लेता है।

प्रसंगवश

किसी साजिश के तहत नहीं आया कोविड-19

कोविड-19 को लेकर सोशल मीडिया पर कई तरह की बातें कहीं गईं। कुछ में इसको चीन की प्रयोगशाला में बना बताया गया। लेकिन ये सही नहीं था।

वायरसों के साथ दो प्रमुख समस्याएं होती हैं। पहली यह कि वायरस में बहुत विविधता पाई जाती है। दूसरी दिक्कत है कि वायरस आपकी अपनी कोशिका की मशीनरी का उपयोग करते हैं। इस वजह से वायरस के कामकाज में बाधा डालते हुए खतरा यह भी रहता है कि कहीं आपकी कोशिकीय मशीनरी प्रभावित न हो। इन मामलों से निपटने के लिए वैज्ञानिक दिन-रात अनुसंधानरत हैं। सोशल मीडिया पर कोविड-19 से जुड़ी कई तरह के मिथकों की बाढ़ आई हुई है। जैसे यह दावा कि कोरोना वायरस चीनी वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोगशाला में निर्मित एक जैविक हथियार है। जबकि प्रतिष्ठित साइंस जर्नल नेचर में प्रकाशित शोध पत्र से यह पता चलता है कि यह वायरस कोई जैविक हथियार न होकर प्राकृतिक है। वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर ये वायरस लैब निर्मित होता तो सिर्फ-और सिर्फ इंसानों के जानकारी में आज तक पाए जाने वाले कोरोना वायरस के जीनोम से ही इसका निर्माण किया जा सकता था मगर वैज्ञानिकों द्वारा जब कोविड-19 के जीनोम को अब तक के ज्ञात जीनोम से मैच किया गया तब वह एक पूर्णतया प्राकृतिक और अलग वायरस के तौर पर सामने आया। नोवल कोरोना वायरस का जीनोम चमगादड़ और पैंगोलिन में पाए जाने वाले बीटाकोरोना वायरस के समान है। होम्योपैथी और आयुर्वेद में इसके इलाज के दावे किए जा रहे हैं, लेकिन चिकित्सा विज्ञानियों की मानें तो ये दावे सही नहीं हैं, क्योंकि यह वायरस नया है। जब तक किसी दवा का क्लिनिकल ट्रायल नहीं हो जाता तब तक हम नहीं कह सकते कि यह दवा काम करेगी या नहीं। महामारी का कहर कैसे बरपा होता है और एक झटके में हजारों जिंदगियां तथा देश-समाज कैसे तबाह हो जाते हैं, 21वीं सदी में दुनिया के ज्यादातर लोगों ने इसका जिक्र कहानियों में ही सुना होगा, लेकिन कोरोना ने उन कहानियों और उसके खौफ को फिर से लोगों में बसा दिया है। वर्तमान स्थिति यह है कि कोविड-19 तेजी से फैल रहा है, कोई पक्का इलाज उपलब्ध नहीं है और यह भी स्पष्ट नहीं है कि आने वाले दिनों में यह बीमारी क्या रुख अख्तियार करेगी। अतः इसे फैलने से रोकने के उपाय करना ही बेहतर होगा। ऐसे में सामाजिक दूरी बनाए रखकर इसके रोकथाम में योगदान दें।

दूसरा पहलू

संकट में भी सेवा देते बैंकर्स

भारत कोरोना के तीसरे चरण की ओर तेजी से बढ़ रहा है, जो भारतवासियों के लिए चिंता का सबब है। इस विपत्ति के समय में स्वास्थ्य कर्मियों के अलावा भी अनेक योद्धा हमारी दिनचर्या को सरल और सामान्य बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं। बैंकर्स भी उन्हीं में से एक हैं, लेकिन उनके योगदान की चर्चा न तो सरकार कर रही है और न ही आम आदमी। यह निश्चित रूप से दुखद स्थिति है। आज जरूरत इस लड़ाई में शामिल सभी लोगों की हौसला अफजाई करने की है।

कोरोना के बढ़ते खतरे के बीच भी सैकड़ों ग्राहक रोज बैंक आ रहे हैं। कस्बाई और ग्रामीण इलाकों में बैंक शाखाओं में सामान्य परिस्थिति वाले दिनों की तरह ग्राहकों की रोज भीड़ जुट रही है। नकदी की लेनदेन, पासबुक अपडेट कराने के अलावा वे अपने अन्य वित्तीय जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। कोई ग्राहक कोरोना से संक्रमित नहीं हो इसके लिए बैंक शाखाओं में सैनिटाइजर्स का इंतजाम किया गया है। बैंक शाखा में साफ-सफाई का ध्यान भी रखा जा रहा है। ग्राहकों को एक-दूसरे से दूरी बनाए रखने के लिए भी कहा जा रहा है।

शहरों के लॉकडाउन होने के बाद भी बैंकर्स बैंक जा रहे हैं, जबकि वे जानते हैं कि उनके संक्रमित होने का बहुत ज्यादा खतरा है। अमूमन, कैशियर और सिंगल विंडो ऑपरेटर करेंसी का लेनदेन करते हैं। ग्राहक मुख्य तौर पर नकदी जमा करने और निकासी करने का काम कर रहे हैं। सिंगल विंडो ऑपरेटर पासबुक अपडेट करने और पैसों को अंतरित करने का काम भी कर रहे हैं। इन सारे कार्यों को करने में कोरोना से संक्रमित होने का डर बना रहता है, क्योंकि करेंसी में या पासबुक में कोरोना का वायरस चिपका हुआ हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि बैंकर्स डॉक्टर नहीं हैं। उन्हें कोरोना से बचने के तरीके नहीं मालूम हैं। इस वजह से भी उनके संक्रमित होने का जोखिम ज्यादा रहता है।

मौजूदा समय में जरूरत है कि हम कस्बाई, गांवों और दूरदराज इलाकों में रहने वाले लोगों को इस आपदा के बारे में बताएं और जागरूक करें। सिर्फ सावधानी बरत कर ही हम इसकी धार को कुंद कर सकते हैं, क्योंकि देश में आज भी बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं का घोर अभाव है। आबादी के अनुसार देश में न तो पर्याप्त अस्पताल हैं और न ही जरूरी मेडिकल उपकरण आदि उपलब्ध हैं। इसमें दो राय नहीं है कि आज बैंककर्मी कोरोना के खतरे को जानने के बावजूद भी अपनी सेवा दे रहे हैं। इसलिए हमें उनका मनोबल बढ़ाने की जरूरत है। इनके साथ ही हमें स्वास्थ्य कर्मियों, सफाई कर्मियों, दूरसंचार क्षेत्र में काम करने वालों, पुलिस, प्रशासन, बिजली एवं जल आपूर्ति को सुनिश्चित करने वाले कर्मियों आदि का भी शुक्रिया अदा करना चाहिए, जो अपनी जान जोखिम में डालकर हमारी सेवा में दिन-रात लगे हैं।

सतीश सिंह

जागरण प्लस

मानवीय संवेदनाएं जाग रही हैं फिल्म इंडस्ट्री में

अविनाश दास

विषयांतर

इधर कुछ दिनों से अभिनेता कार्तिक आर्यन के विडियो संदेश वायरल हो रहे हैं। इनमें वह कोरोना वायरस के प्रति लोगों की लापरवाही पर खीझ दिखा रहे हैं। सोशल मीडिया पर संदेशों की लंबी शृंखला है, जिसमें लोगों को बताया जा रहा है कि वे क्या करें, क्या न करें। खास जोर इस पर है कि जहां तक हो सके, सबको अपने घर में ही रहना चाहिए। सुविधा संपन्न लोगों के लिए एकांत एक लग्जरी है, लेकिन उनका क्या जो दिन के हिसाब से कमाते हैं और अपने परिवार के लिए रोजी-रोटी जुटाते हैं? इन मुश्किलों को आसान बनाने के उपायों पर कोई बातचीत फिलहाल सार्वजनिक मंचों पर नहीं दिख रही। मगर ऐसा नहीं है कि कहीं इस दिशा में कोई कोशिश ही नहीं हो रही है। जैसी उम्मीद की किरण केरल की सरकार से दिखती है, जिसने कोरोना वायरस से निपटने के लिए बीस हजार करोड़ रुपये के पैकेज का एलान किया है, कुछ वैसी ही रोशनी बॉलीवुड की ओर से भी तब दिखाई दी, जब चर्चित फिल्म निर्देशक सुधीर मिश्रा ने बॉलीवुड के कुछ संवेदनशील डायरेक्टरों से अपील की कि वे उन लोगों की मदद के लिए आगे आएं, जिनकी कमाई का जरिया रोज का श्रम है। विक्रमादित्य मोटवानी और अनुराग कश्यप से लेकर हंसल मेहता, राहुल ढोलकिया, निखिल आडवाणी और अनुभव सिन्हा जैसे निर्देशक इस अपील के बाद सक्रिय हुए। मुंबई फिल्म इंडस्ट्री में लाखों की तादाद में डेली वेज वाले श्रमिक हैं। इनके लिए फंड जुटाना और एक-एक तक मदद पहुंचाना आसान नहीं। इसके लिए सारी फिल्म निर्माता कंपनियों का साथ होना जरूरी है, ताकि सूची बनाने में आसानी हो। प्रोड्यूसर्स असोसिएशन इसके लिए आगे आया है। बड़ी बात यह कि ये लोग गंभीरता से इस काम में लगे हुए हैं। सुधीर मिश्रा ने यह अपील ट्विटर के जरिये 15 मार्च को की थी। उसके बाद ही यह पहल शुरू हुई और फिर आगे बढ़ती गई।

साल 2011 में एक अमेरिकी फिल्म 'कंटेजिएन' (संक्रमण) आई थी, जिसकी कहानी कुछ उसी तरह के हालात में बनती है, जैसे आज इटली, ईरान और खुद भारत में भी दिखाई पड़ रहे हैं। फिल्म में अपनों को बचाने की कवायद करते हुए लोग हैं और सरकारी प्रयासों के भीतर एक कॉस्पिरेसी थियरी का पीछा करता हुआ स्वतंत्र पत्रकार है। मानवता के लिए अपनी निजी सुरक्षा से समझौता करने वाले बड़े लोगों की कोई कथा इस फिल्म में शामिल नहीं है। अलबत्ता छोटे लोगों की एक ऐसी कथा जरूर है, जिसमें एक लेडी डॉक्टर को संक्रमण हो जाता है और वह मरीजों की भीड़ में शामिल हो जाती है। चीन के वूहान शहर के एक अस्पताल में जब कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की जान बचाने में लगे डॉ फंग यिनह्वा की मौत हो गई तो 'कंटेजिएन' की उसी युवा डॉक्टर की याद आ गई। हमारे यहां भी हर किसी को एकांत में रहने के लिए कहा जा रहा है, लेकिन डॉक्टर्स की सोशल मीडिया प्रोफाइल पर जाइए तो आपको उनकी तस्वीर के साथ एक टैग लाइन मिलेगी, 'आइ कैन नॉट स्टे होम, आइ एम अ हेल्थकेयर वर्कर।' (मैं घर में नहीं रह सकता, मैं एक स्वास्थ्यकर्मी हूं।)

बॉलीवुड में लोग जरूर घरों में बैठ गए हैं और सारा कामकाज ठप हो गया है, लेकिन इससे प्रभावित होने वाले मजदूरों के लिए निर्माता-निर्देशकों की फौज जिस तरह से एकजुट हुई है, ऐसा पहले कभी नहीं देखा गया। यहां चमकते हुए सितारों की लौ जब मद्धिम होने लगती है, तो लोग उन्हें भी भूल जाते हैं। ओपी नैयर जैसे बड़े संगीतकार को अपने आखिरी वक्त में अकेलेपन का दुख झेलना पड़ा। इंडस्ट्री की बेवफाई से वे इस कदर खफा थे कि उन्होंने कह दिया कि उनकी अंतिम यात्रा में कोई शरीक न हो। ऐसे किस्सों की लंबी फेहरिस्त है। एक फेहरिस्त ऐसे किस्सों की भी है जिसमें लोगों ने लोगों की मदद की है। लेकिन मदद के दौरान मजदूरों को भी पूछा गया हो, ऐसे किस्से बॉलीवुड में नहीं सुनने को मिलते। एक्सट्राज और सहायक टेक्नीशंस के बारे में कभी कोई बात नहीं होती। आज जब फिल्म इंडस्ट्री में लोग ज्यादा संवेदनशील हो रहे हैं, वायरस की वजह से पैदा हुई शट डाउन की स्थिति में सबसे कमजोर लोगों के हाथ थामने की पहल हुई है तो यह कोई छोटी बात नहीं है। हम जो करते हैं, उसका असर हमारी रचना, हमारे सृजन पर भी पड़ता है। उम्मीद करें कि आने वाला वक्त मुंबई फिल्म इंडस्ट्री के लिए और ज्यादा मानवीय होगा।

जनता कर्फ्यू में महिलाओं की अनोखी पहल

जनता कर्फ्यू से जुड़ा एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जिसमें कुछ महिलाओं के जनता कर्फ्यू में शामिल होने का अनोखा अंदाज देखने को मिल रहा है।

कोरोना के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए देश के कई राज्यों में लॉकडाउन है। इससे पहले 22 मार्च को जनता कर्फ्यू था, जिसमें देश के हर कोने से लोग शामिल हुए। जनता कर्फ्यू से जुड़ा एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें कुछ महिलाओं के जनता कर्फ्यू में शामिल होने का अनोखा अंदाज देखने को मिल रहा है। दिल को छू लेने वाले इस वीडियो को लोग भी खूब पसंद कर रहे हैं।

वन विभाग अधिकारी सुशांत नंदा ने इस वीडियो को अपने ट्विटर अकाउंट से सोशल मीडिया पर शेयर किया है। इस वीडियो में महिलाएं ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों को चाय-नाश्ता देती नजर आ आ रही हैं। नंदा ने इस वीडियो को शेयर करते हुए लिखा है कि इन महिलाओं ने सराहनीय काम किया है। इन्होंने जनता कर्फ्यू के दिन शाम को 5 बजे के अभिवादन करने वाले घटनाक्रम से कहीं बेहतर किया है। देश के उन जवानों को सलाम, जो विपदा की इस घड़ी में खुद जोखिम उठाकर हमारी सुरक्षा सुनिश्चित कर रहे हैं।

उन्होंने इस वीडियो को कल शाम 5 बजकर 12 मिनट पर शेयर किया था, जो 31 सेकेंड का है। इस वीडियो को अब तक 47 हजार से अधिक लोग देख चुके हैं। वहीं, इस वीडियो को 4800 से अधिक लोगों ने लाइक किया है, तो 1000 से अधिक लोगों ने इसे रिट्वीट किया है। 100 से अधिक लोगों ने अब तक कमेंट किए हैं, जिसमें उन्होंने महिलाओं और ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मियों की तारीफ की है। कई यूजर्स ने इन महिलाओं की तारीफ की है, तो कुछ लोगों ने वीडियो का लोकेशन जानने की इच्छा जाहिर की। कुछ यूजर्स ने महिलाओं के इस कदम को मानवता से जोड़कर देखा है। उनका कहना है कि यह देखकर लगता है कि मानवता अब भी जीवित है। हालांकि कई यूजर्स ने वन अधिकारी नंदा के कैप्शन पर सवाल उठाया है। उन्होंने एक जगह पर महिलाओं की प्रशंसा करते हुए दूसरे लोगों के थाली बजाने पर कोलाहल शब्द का प्रयोग किया है। इसको लेकर लोगों ने अपनी आपत्ति जताई है। एक यूजर वेंकेट ने लिखा है कि कोलाहल? वास्तव में! सर, हर कोई अपना अपना सहयोग दे रहा है। कई सोसाइटीज ने अपने यहां काम करने वाले सफाई और अन्य कर्मचारियों को वैतनिक अवकाश दिया है। फिर बेकार की चीजों से इनकी तुलना करके उसको महत्वहीन न करें।

धरोहर

मैहर की शारदा मां की अपरंपार है महिमा

मध्य प्रदेश के पूर्वोत्तर भाग में सतना जिले में मैहर माता शारदा का मंदिर दुनियाभर में प्रसिद्ध है। आज के औद्योगिक शहर सतना से करीब 44 किमी की दूरी पर स्थित मैहर माता शारदा से जुड़ी रोचक और जरूरी बातें इस प्रकार हैं। मैहर स्थित मां शारदा मंदिर की सबसे बड़ी खासियत यह मानी जाती है कि जब से देवी त्रिकूट पर्वत पर विराजमान हैं, तब से यहां अखंड ज्योति जल रही है। इसी पर्वत की चोटी पर माता के साथ ही काल भैरव, हनुमान, देवी काली, दुर्गा, गौरीशंकर, शेषनाग, फूलमति माता, ब्रह्मदेव और जालपा देवी की भी पूजा की जाती है। यह पूरा इलाका आध्यात्मिक शांति की चाह रखने वालों के लिए उपयुक्त है। इस जगह पर आना आत्मिक सुख दे सकता है।

मंदिर की ऐतिहासिकता: *माना जाता है कि माता शारदा की मूर्ति की स्थापना विक्रम संवत 559 में की गई थी। मूर्ति पर देवनागरी लिपि में शिलालेख भी अंकित है। इसमें बताया गया है सरस्वती के पुत्र दामोदर ही कलयुग के व्यास मुनि कहे जाएंगे। दुनिया के जाने-माने इतिहासकार ए कनिंघम ने इस मंदिर पर विस्तार से शोध किया है। यहां प्राचीनकाल से ही बलि देने की प्रथा चली आ रही थी, लेकिन 1922 में सतना के तत्कालीन राजा ब्रजनाथ जूदेव ने पशुबलि पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया।*

आल्हा-ऊदल भी थे माता के भक्त: *स्थानीय किंवदंती के अनुसार, मैहर देवी देश का इकलौता शारदा मंदिर है। कहा जाता है कि बुंदेलखंड के वीर योद्धा आल्हा को यहीं से वरदान मिला था। इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि पृथ्वीराज चौहान के साथ ही आल्हा और ऊदल भी शारदा माता के भक्त थे। इन दोनों ने ही सबसे पहले जंगलों के बीच शारदा देवी के इस मंदिर को खोजा था। इसके बाद आल्हा ने इस मंदिर में 12 साल तपस्या कर देवी को प्रसन्न किया था और माता ने उन्हें आशीर्वाद दिया था। यहां मंदिर के पास आल्हा-ऊदल तालाब भी है।*

जागरण जनमत

आज का सवाल

क्या कोरोना संकट के बाद वैश्वीकरण की प्रक्रिया कमजोर पड़ेगी?

अपनी राय दें
E-mail
modemdj@gmail.com
सभी परिणाम प्रतिशत में

कल के सवाल का परिणाम

क्या कोरोना के चलते जनगणना और एनपीआर की कवायद को कुछ दिनों के लिए स्थगित कर देना चाहिए?